International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN 2250-2629, (Print), E- ISSN 2320-5466, Issued -6, Vol- I, June, 2013

शोध पत्र- संगीत

किराना घराने के कुछ प्रमुख कलाकारों की उपलब्धियाँ एवं उनके द्वारा स्वरबद्ध कुछ बंदिशें

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

किराना घराना एक प्रसिद्ध घराना है। किराना घराना का नाम सुनते ही इस घराने के प्रसिद्ध गायक ''उस्ताद करीम खाँ'' ''उस्ताद आमीर खाँ'' ''उस्ताद वहीद खाँ की याद आ जाती है , जिन्होंने इस घराने को समद्ध बनाया। इस घराने के प्रसिद्ध बीनकार ''सादिक अली खाँ'' थे। उनके पुत्र 'बंदे अली खाँ' जो बीनकार तो थे किन्तु अच्छे गायक भी थे।

''ग्वालियर घराने के बाद किराना घराना ने सबसे अधिक कलाकार दिये हैं किराना के सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध गायक हुए हैं, ''उस्ताद करीम खाँ'' आज इन्हीं के गायकी से किराना की पहचान होती है। वैसे इस घराने का उद्‌गम बीनकार उस्ताद बंदे अली खां से माना जाता है।''[1]

''करीम खाँ और अब्दुल वहीद खाँ इस घराने के विशेष प्रतिनिधि हुए, जिन्होंने इस घराने को बहुत आगे बढ़ाया। अब्दुल करीम खाँ अपनी मधुर आवाज तथा मधुर गायकी के कारण अधिक लोकप्रिय हुये। अब्दुल वहीद खाँ करीम खाँ के निकट सम्बन्धी थे जो मित्ख में रहते थे। इस घराने के प्रतिनिधि थे। अब्दुल करीम खाँ चार भाई थे– अब्दुल हक्क, अब्दुल गनी, अब्दुल मजीद और स्वयं अब्दुल करीम खाँ । स्व0 रामभाऊ कुन्दिगोलकर (सवाई गंधर्व) तथा स्व0 सुरेस बाबु माने इसी परम्परा के गायक थे, जिन्होंने अब्दुल करीम खाँ से शिक्षा प्राप्त की थी। आजकल इस घराने के प्रमुख प्रतिनिधि कलाकार हैं– हीराबाई बड़ोदर, भीमसेन जोशी, सरस्वतीबाई राने, वस्वराज राजगुरू, गंगूबाई हंगल, स्व0 रज्जब अली खाँ (देवास) उस्ताद अमीर खाँ, बहरे बुआ, रोशन आरा बेगम'[2] ।इसके अलावा इस घराने में कुछ अन्य नाम भी प्रसिद्ध हैं जिनमे–पंडित प्राणनाथ, उस्ताद हाफिज उल्लाखान, उस्ताद मशकूर खान ,श्रीमती सरस्वती राणे,श्रीकांत देशपांडे, अब्दुल वहीद,खान,बेगम अख्तर पंडित माधवगुडी श्रीनिवास,जोशी, , डॉ प्रभा आर्त्रे इत्यादि।

किराना घराने में शैलीगत सौन्दर्य–

''स्वर लगाने का अपना विशेष ढंग एक–एक स्वर शनैः–शनैः आगे बढ़ाते हुए गाना, आलाप प्रधान गायकी इसकी विशेषताएं है।''[3] इस घराने विशेषताओं में ''अति विलम्बित लय में बंदिश का प्रस्तुतीकरण, एक एक स्वर का क्रमिक श्ंगार, चैनदारी के साथ आलाप, सरगम का आलाप स्वर–लगाव में लोच, विशेष माधुर्य इस घराने के प्रमुख गुण हैं।''[4]

इस घराने में स्वर लगाव व चैनदारी का अधिक महत्व है। धीमी बढ़त साफ स्वर व कोमलता इसकी विशेषता है। इस घराने को जिन्होंने रौशन किया है उनके नाम है– हीराबाई बड़ौदर, गंगुबाई हेगल, सवाई गन्धर्व, सरस्वती राणे सुरेश माने आदि।''[5]

''कितना गाने के बाद, बोल बनाव करते हैं इनके गान में बोल आलाप को ही ज्यादा प्राधान्य होता है। फिर अन्त में तान का काम करता है। किराना ने ख्याल में अनिबद्ध रूप को स्थान दिया। आलापचारी पद्धति और सपाट तान किराना घराने की विशेषता मानी गयी। किराना में ख्याल का इतना विलम्बित ढंग वाहिद खाँ से आया है। फिर वाहिद खाँ से यह ढंग हीराबाई को मिला था। आगे चलकर यह किराना का ढंग बन गया।''[6]

किराना घराना अपने आप में एक प्रसिद्ध एवं समृद्ध घराना है जिसने बहुत से सुरीले एवं प्रसिद्ध गायक संगीत जगत को दिया है। किराना घराने के प्रमुख कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली बंदिशें इस प्रकार हैं–

उस्ताद अब्दुल करीमखां–

किराना घराने की विशिष्ट विभूति उस्ताद अब्दुल करीम खां का जन्म सन १८८४ ईस्वी में मुजफ्फर पुर जिले के किराना नामक स्थान पर हुआ था'[7] । इन्हें उस्ताद छगे खां का वंशधर माना जाता है'[8]। इन्होने बहुत सी बंदिशों को स्वरबद्ध किया उदाहरण स्वरूप इनकी स्वरबद्ध एक बंदिश निम्नलिखित है –

राग तिलंग–

द्रुत लय, ताल–एकताल, स्वरबद्ध– उस्ताद अब्दुल करीम खाँ स्थायी–जाओ जाओ सखी मधुबन में बंसी बजावत कान्हा अंतरा– मधुर मधुर मुरली सुनावत मोरी आली कान्हा जाओ जाओ सखी मधुबन में बंसी बजावत कान्हा

पंडित भीमसेन जोशी–

भारत रत्न से सम्मानित पंडित भीमसेन जोशी का जन्म ४ फरवरी १६२२ को कर्णाटक के 'गदग' नामक स्थान पर हुआ था । इन्होने पंडित रामभाऊ कुन्द्‌गोलकर और सवाई गन्धर्व से किराना घराने की तालीम हासिल की थी । इनकी गायकी में किराना घराने की सभी बारीकियों को देखा जा सकता है । इन्होने न केवल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बल्कि अभंग एवं भक्तिसंगीत में भी अति प्रतिष्ठा प्राप्त की थी । भारतीय शास्त्रीय संगीत में इनके उत्कृष्ट योगदान के लिए इन्हें भारत

सरकार ने सन १९७२ में 'पद्मश्री',१९७८ में 'संगीत नाटक एकेडेमी पुरस्कार', १९८५ में 'पद्मभूषण', १९९९ में 'पद्मविभूषण' एवं सन २००८ में सर्वोच्च भारतीय सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया । इनके द्वारा स्वरबद्ध एक बंदिश निम्नलिखित है –

राग केदार– विलंबित लय, ताल –एकताल , स्वरबद्ध– पंडित भीमसेन जोशी स्थायी–सोहे लराई माई बनरा जाने, अब बनरी तू अंतरा–कौन कौन गवेको अत धूम धाम दाने बनरी

विदुषी गंगूबाई हंगल–

इनका जन्म ५ मार्च १९१३ को कर्णाटक के धारवाड़ जिले में हुआ था । इन्होने दत्तोपंत देसाई और सवाई गन्धर्व से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तालीम ली थी । भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए इन्हें सन १९७१ में 'पद्मभूषण', सन १९७३ में 'संगीत नाटक एकेडेमी' सम्मान, १९९६ में 'संगीत नाटक एकेडेमी फेलोशिप' और सन २००२ में 'पद्मविभूषण' के सम्मान से सम्मानित किया गया । इनके द्वारा स्वरबद्ध एक बंदिश निम्नवत है–

राग चंद्रकौंस–

द्रुत लय ,ताल–तीनताल, स्वरबद्ध– गंगूबाई हंगल
स्थायी–कब घर आवो पिया मोरे पास ये रुत यूही जात
अंतरा–निसिदिन मई तरपत हूँ सजनी पिया के मिलन की बात मोरी जात ।।

विदुषी डॉ प्रभा आत्रे–

भारत की उत्कृष्ट गायकों में डॉ प्रभा आत्रे का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है य इनका जन्म १३ सितम्बर सन १९३२ में महाराष्ट्र के पुणे जिले में हुआ था य इन्होने सुरेशभाऊ मने और विदुषी हीराबाई बारोदकर से संगीत की शिक्षा ली । इनके अमूल्य सांगीतिक योगदान के लिए भारत सरकार ने सन १९९० में 'पद्मश्री' ,सन १९९१ में संगीत नाटक एकेडेमी सम्मान एवं सन २००२ में 'पद्मभूषण' सम्मान से नवाजा । इनके द्वारा स्वरबद्ध कुछ बंदिशें इस प्रकार हैं –

राग दुर्गा–

द्रुत लय, ताल–तीन ताल,स्वरबद्ध डॉ प्रभा आत्रे
स्थायी–माता भवानी काली दुर्गा गौरी विघनहारनी भवतारनी
अंतरा–जगत जननी लक्ष्मी ज्ञानदेवी सरसती मधुर भाषनी सुखदायनी

राग कलावती–

द्रुतलय, ताल–एकताल ,स्वरबद्ध दृडॉ प्रभा आत्रे
स्थायी–तन मन धन तोपे वारूँ बार बार
तोरी सावरी सूरत और नैनवा रसीले
अंतरा–सावरी सूरत मोहनी मूरत ,निरखत कई मोहे बार बार

राग यमन –

मध्य लय, ताल–तीन ताल,स्वरबद्ध –डॉ प्रभा आत्रे स्थायी–लागी लागी रे हरी संग प्रीत ये जनम जनम की अंतरा–जित देखूं उत हरी नित पाऊं दासी मई जनम जनम की

राग यमन–

द्रुत लय, ताल–तीनताल, स्वरबद्ध–डॉ प्रभा आत्रे स्थायी–गुरु चरन लागो मोरे मन पावत सब सुख और ज्ञान । अंतरा–सत गुरु संगत सब से भारी जोत जलाये अन्तरयामी

राग यमन–

तराना , ताल–एकताल, स्वरबद्ध –डॉ प्रभा आत्रे ओदे तनन् दिम् तदरे दानि,
तदरे दानि दानि दानि दानि
तारे दानि तदरे दानि
ओदेरे दानि तादारे दानि

पंडित फिरोज दस्तूर–

संगीत नाटक एकेडेमी पुरस्कार से सम्मानित पंडित फिरोज दस्तूर का जन्म १९१८ में एक पारसी परिवार में हुआ था । इन्होने पंडित कृष्णराव जाव्कर से किराना घराने की गायकी सीखी थी । इनके द्वारा स्वरबद्ध एक बंदिश इस प्रकार हैं –

राग मालकौंस –

द्रुत लय, ताल–तीन ताल , स्वरबद्ध – फिरोज दस्तूर
स्थायी –मन मंदिर में आन बसे है मोरे राजन के राज
अंतरा–जब तक घट में प्रान रहे हैं निसदिन तुम्हरो ध्यान रहे हैं रहे यही अब दस्तुर मोरा

पंडित बसवराज राजगुरु–

'सुर के बादशाह' एवं किराना घराने के अनमोल रत्न पंडित बसवराज राजगुरु का जन्म २४ अगस्त १९१७ को धारवाड़ जिले ले यालिवल नामक स्थान में हुआ था ।इन्होने पंचाक्षर गवई से किराना घराना गायकी की तालीम हासिल की थी ।

इन्होने अपने उत्कृष्ट गायकी से सम्पूर्ण संगीत जगत को अविभूत किया । इनके द्वारा दिए गए अमूल्य योगदान को हमारा संगीत जगत सदैव इनका आभारी रहेगा । संगीत में अमूल्य योगदान के कारण भारत सरकार ने सन १९७५ में 'पद्मश्री' एवं १९९१ में 'पद्मभूषण' सम्मान से सम्मानित किया।

राग हंसध्वनि–

द्रुतलय, ताल –तीन ताल ,स्वरबद्ध – बसवराज राजगुरु स्थायी –बालम न जा घर सौतन के बार बार तोसे बिनती करत हूँ मान मोरे जसुमति नन्द के अंतरा–रैन अँधेरी चमके बिजुरी डर पावत जिया छतिया थरके

किराना घराने में विभिन्न रागों में प्रचलित कुछ अन्य बंदिशें निम्नलिखित हैं –

राग शुद्धकल्याण –विलंबित लय, ताल –एक ताल
स्थायी –तुम बिन कौन खबरिया ले बिन राम रघुनाथ दया दान
अंतरा–दूध पूत और अन्न धन लछमी विद्या के करतार
राग दरबारीकानडा–मध्यलय ,ताल –तीन ताल

स्थायी –जब सुधि लगी तोरे दरस की लागी कलेजे पीर पीर
देखो अंतरा–वृन्दावन वंशीवट त्यागी त्यागो जमुना नीर आपही
जाये द्वारका ठाडे ठाडी नदी के तीर देखो

राग मालकौंस –

विलंबित लय, ताल –एक ताल
स्थायी –पग लागन दे मोरे महराज कुंवर
अंतरा–सदा रंगीली प्रीतम पावन दे

उपरोक्त राग मालकौंस की बंदिश किराना घराना की प्रसिद्ध बंदिशों में से एक है । इस बंदिश के रचयिता 'सदा रंगीले' माने जाते हैं । इस बंदिश को सुनने पर किराना घराने की चौनदारीयुक्त गायकी स्पष्ट रूपसे दिखाई देती है । इस राग को पंडित भीमसेन जोशी जी ने बहुत सुकून एवं स्वरों पर पूर्ण नियंत्रण के साथ गाया है, जोकि किरण घराने की गायकी के सौंदर्य को उजागर करता है । पंडितजी की गायी एक अन्य सुमधुर बंदिश कुछ इस प्रकार है –

सुमिरौं तेरो नाम,जीव दिया सब संसार
हे काजी करीम अरज करत इब्राहीम मेरे तो मौला
तुझ बिन कौन निसतारे , सुमिरौं तेरो नाम'[9]

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का किराना घराना अपने आप में बहुत समृद्ध एवं सारगर्भित रहा है , इस घराने ने बहुत से बहुमूल्य रत्न दिए हैं जिन्होने न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि संपूर्ण जगत में अपनी कीर्ति को बिखेरा है । इस घराने के गायकों ने स्वरों पर विशेष ध्यान दिया है, जिसके कारण इस घराने की गायकी में सुकून एवं चौनदारी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । उपरोक्त विश्लेषण से यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि भारत सरकार ने इस घराने के गायकों को भारत के सभी सर्वोच्च सम्मानों से सम्मानित किया है जोकि किराना घराना के गायकों द्वारा दिए गए अतुलनीय सांगीतिक योगदान का ही परिणाम है ।

संदर्भ ग्रंथ

1 .भारतीय संगीत और संगीतज्ञ – रामलाल माथुर – पृ0 48
2. राग परिचय– हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 250
3. संगीत घराना अंक, पृ0 49
4. भारतीय संगीत का सौन्दर्य– विधान– डा0 श्रीमती मधुर लता भटनागर पृ0 178
5. भारतीय संगीत और संगीतज्ञ – रामलाल माथुर– पृ0 48
6. कंठ संगीत में घराना व्यवस्था का विवर्तन – डा0 राधा मिश्रा पृ0 46–57
7. भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण दृ डॉ.स्वतंत्र शर्मा,पृ. 244, 1986
8. संगीतायन– अमला दासशर्मा, आर्य प्रकाशन मंडल , पृ. 34, 2007
9. हमारा शहर उस बरस दृ गीतांजली श्री , राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड , पृ. 104,2007